Meaning of Career

निर्देशन एक व्यापक प्रक्रिया है इसको कई उप-प्रक्रियाओं में विभाजित किया गया है। इस अध्याय के पिछले प्रकरणों में शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक निर्देशन, सामाजिक निर्देशन तथा व्यक्तिगत निर्देशनों का वर्णन किया है। इन निर्देशन प्रक्रियाओं का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से विचार किया जाए तो सभी निर्देशनों का एक ही लक्ष्य होता है। जीवनवृत्त (Career Guidance)।

सरल शब्दों में व्यवसाय जीविकोपार्जन का तरीका होता है, इसमें कृषि, उद्योग, नौकरी, मछली पालन आदि वे सभी रोजगार सम्मिलित होते हैं, जिनसे कोई मानव-समूह अपने जीवन-यापन के लिए आवश्यक साधन और सुविधा अर्जित करता है। इस दृष्टि से वृत्ति एक विशिष्ट व्यवसाय है। शब्दकोश के अनुसार एक वह व्यवसाय है जिसमें वैज्ञानिक अथवा कलात्मक अधिगम अर्थात शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता पड़ती है। परम्परागत और विशिष्ट वृत्तियों के रूप में चिकित्सा और वकालत को आदर्श माना जाता है। एक डॉक्टर या वकील या इंजीनियर को लम्बी अवधि विशिष्ट शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुभव अर्जित करना पड़ता है। तत्पश्चात उसे व्यवसाय में प्रवेश का लाइसेंस प्राप्त करना पड़ता है। तब कहीं वह इस वृत्ति का व्यवहार में उपयोग कर सकता है। वास्तव में एक वृत्तिवान अपने अर्जित ज्ञान और प्रशिक्षण द्वारा अपने ग्राहकों जैसे मरीज या छात्र को अपने ज्ञान, परीक्षा और अनुभवों द्वारा सेवा प्रदान करता है। इस बौद्धिक कौशल पर आधारित सेवा प्रदान करना ही उसकी वृत्ति है। इस सेवा के बदले वह अपने मरीजों से फीस लेता है।

आधुनिक समाज में अनेक वृत्तियों का विकास हो गया है जैसे- चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी, आर्किटेक्ट, इंजीनियरी, व्यावसायिक पत्रकारिता, फिल्म एक्टिंग आदि। विद्वानों ने इन वृत्तियों का अध्ययन कर उनमें पाये जाने वाले सामान्य लक्षणों को निर्धारण किया है।

MARCH

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Phone/Email/Notes
Notes

Scanned with CamScanner

शिक्षकों को वृत्तिक विकास उनकी एक पेशे के रूप में आत्मीयापित होने की आवश्यकता है। और आज के दूरगामी, परिवर्तनशील तकनीकी-समाज की माँग है जब तक किसी समाज का शिक्षक जागरूक नहीं होगा, तब तक वह समाज भी प्रगति की ओर अग्रसर नहीं होगा।

Characteristics of Career

किसी वृत्ति में आमतौर पर निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं।

1) दीर्घकालीन शिक्षा प्रशिक्षण और कार्यानुभव की लम्बी अवधि का होना → किसी भी वृत्ति को अपनाने के लिये आवेदक को लम्बी प्रक्रिया से गुजरना होता है। जिसमें विशिष्ट ज्ञान और उस ज्ञान को प्रयोग करने का कौशल अर्जित करना पड़ता है। तभी उसे वृत्ति विशेष में कार्य करने की सामाजिक अनुमति प्राप्त हो पाती है।

2) व्यक्ति या समाज की किसी महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति से सम्बन्धित होना → वृत्ति का प्रमुख उद्देश्य वैयक्तिक या सामाजिक ऐसी आवश्यकता की पूर्ति करना है जिसे सामाजिक महत्ता प्राप्त होती है, या जो जीवन का अनिवार्य अंग मानी जाती है। उदाहरणार्थ — चिकित्सा, भवन-निर्माण या न्यायिक प्रक्रिया ऐसी ही आवश्यकतायें हैं।

3) सामाजिक प्रतिबद्धता → वृत्ति के साथ सामाजिक प्रतिबद्धता का तथ्य भी जुड़ा है, यह आशा की जाती है कि वृत्ति अथवा पेशों से जुड़े लोग समाज एवं अपने ग्राहकों के प्रति प्रतिबद्ध होंगे, वे अपने ग्राहकों के हित की गोपनीयता और सर्वोपरि कुशलता प्रयोग करेंगे। शिक्षक अपने छात्रों के हितों का ध्यान रखता है।

Phone/Email/Notes

Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

4) सेवा के लिये उचित फीस लेने का अधिकार :- वृत्ति समूह अपनी सेवाओं के लिये ग्राहकों से स्वः निर्धारित फीस ले सकता है।

5) वृत्तिक आचरण संहिता का होना :- प्रत्येक वृत्ति के साथ एक आदर्श आचरण संहिता जुड़ी होती है। प्रायः यह आचरण संहिता उस वृत्ति के परिषद् द्वारा निर्धारित होती है। वकील और डॉक्टर क्रमशः अपने परिषदों जैसे बार काउन्सिल द्वारा ही लाइसेन्स प्राप्त करते हैं। और उनके इन वृत्तिक परिषदों जैसे- बार काउन्सिल द्वारा ही लाइसेन्स प्राप्त करते हैं और उनके इन वृत्तिक परिषदों ने ही अपने सदस्यों के लिये आचरण संहिता का भी निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत किसी उल्लंघनकर्ता का उस वृत्ति के कार्य करने का लाइसेन्स भी निरस्त किया जा सकता है।

6) एक वृत्तिक संघ का होना :- प्रत्येक वृत्ति में एक वृत्तिक संघ की स्थापना पायी गयी है। वह संघ सम्बन्धित वृत्ति के विकास और नियमन के कार्य करता है। सर्वाधिक रूप से उसके अधिवेशन होते हैं, विभिन्न क्षेत्रों से उन अधिवेशनों में वृत्ति के क्षेत्र में होने वाले नये आविष्कारों की जानकारी प्रदान की जाती है, वृत्ति से जुड़े समस्याओं पर विचार किया जाता है और उन समस्याओं के समाधान के लिये उपयुक्त प्रस्ताव पारित किये जाते हैं। ऐसे संघ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर क्रियाशील रहते हैं।

Phone/Email/Notes

Notes

MARCH

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

Notes

7) स्वायत्तता और स्व: नियमन :- यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें स्वायत्तता और स्व: नियमन का अनुसरण किया जाता है। यह समूह न केवल काम लेकर अपनी सेवाऐं प्रदान करियर निर्देशन की प्रक्रिया रोजगार से सम्बन्धित के समाधान की प्रक्रिया है जिसका चयन करके जीवन में प्रगति कर सके और रोजगार के अवसरों में अपनी क्षमताओं तथा गुणों का पूर्ण उपयोग कर सके।

Characteristics of Career Guidance

1) करियर निर्देशन एक औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से रोजगार तथा व्यवसाय चयन में सहायता करने की प्रक्रिया है।

2. इस निर्देशन के अन्तर्गत शैक्षिक, व्यावसायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत निर्देशनों को सम्मिलित किया जाता है।

3. यह युवक के भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है।

4. इसका लक्ष्य भावी जीवन को सुखी एवं प्रगतिशील बनाना है।

5. जीवन-वृत हेतु निर्देशन कोई निश्चित अवस्था तथा आयु नहीं होती है। औपचारिक रूप से

6. करियर निर्देशन के स्व: व्यवस्थित अभिविन्यास किया जाता है।

7. इसमें आदर्श भावना तथा आत्म-संयम की भावना पर बल दिया जाता है।

8. इसमें निर्देशन प्रक्रिया में किसी की भी भूमिका अहम हो सकती है।

Need of Career Guidance

i) कैरियर निर्देशन की प्रक्रिया ने राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। कैरियर निर्देशन केन्द्र प्रशिक्षण, तकनीकी के पर्याप्त ज्ञान की व्यवस्था करते हैं। युवकों में अपेक्षित कौशलों का विकास करते हैं। जिससे किसी उद्योग में प्रबन्धक स्तर पर पद प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण की गुणवत्ता से संस्थागत कार्यक्रमों, प्रयोगशाला, कार्यशाला तथा सहायक प्रणाली के संचालन में सफल हो सकें। युवकों के व्यक्तित्व के विकास, सकारात्मक अभिवृत्ति तथा मूल्यों का विकास किया जाता है।

2) किशोरावस्था में विशिष्ट प्रकार की अभिवृत्ति होती है। और उनकी विविध प्रकार की आवश्यकताएँ होती हैं- जैसे - शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक, व्यावसायिक तथा भावात्मक आवश्यकताएँ। उनकी आवश्यकताओं की पहचान करके उनकी पूर्ति करने का प्रयास करना होता है। विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाए जिससे वे भावी जीवन के प्रति जागरूक हो सकें और इस प्रकार उनका अभिविन्यास किया जाए।

3) निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की छात्रों के लिए कभी-कभी व्यवस्था से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है- निर्देशन की सभी सेवाओं की समन्वित रूप में व्यवस्था की जाए तभी बालकों का सम्पूर्ण विकास किया जा सकता है, इसके लिए केन्द्र स्थापित किये जायें। इन केन्द्रों पर छात्रों को सहायता प्रदान की जाए, जिससे वह अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य निर्धारित कर सकें।

Phone/Email/Notes
Notes
APRIL
M 3 10 17 24
T 4 11 18 25
W 5 12 19 26
T 6 13 20 27
F 7 14 21 28
S 1 8 15 22 29
S 2 9 16 23 30

Scanned with CamScanner

5) विद्यालय स्तर पर छात्रों की प्रतिभाओं एवं रुचियों की पहचान की जाए, वह सभी छात्रों की आवश्यकता, रुचि एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने का अवसर दिया जायेगा। कुछ बालक आवश्यकता की अधिकता से लेकर बना रहे हैं और समस्याग्रस्त हो जाते हैं। किशोरावस्था में शिक्षा के प्रति जागरूकता अधिक की जाती है। सभी में कोई न कोई प्रतिभा होती है अतः विकास का अवसर दिया जाए।

Phone/Email/Notes

Notes

MARCH

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner